

श्रीमद्भागवतम् स्कन्ध 4 अध्याय 24: शिव का स्तोत्र

21 September 2026



पाठ से पहले एक निवेदन

श्रीमद्भागवत महापुराण के ये अध्यायवार सार गीता प्रेस भागवत को मुख्य आधार मानकर तैयार किए गए हैं। ये भागवत के अध्ययन में सहायक हैं, मूल ग्रंथ का स्थान नहीं ले सकते।

अध्ययन का मुख्य और अनुशंसित मार्ग गीता प्रेस की भागवत पुस्तक से सीधा पाठ है। यात्रा में, घर से दूर, या जब पुस्तक पास न हो, तब निरंतर अध्ययन, पुनरावृत्ति और समझ के लिए इन सारों का सहारा लिया जा सकता है।



दस राजकुमार भ्राताओं की सच्चाई से प्रसन्न होकर, भगवान् शिव उन्हें कृपापूर्वक परम भगवान् की स्तुति का एक पवित्र स्तोत्र सिखाते हैं, जो उन्हें उनकी महान् तपस्या के पार ले जाएगा।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

श्रीमद्भागवतम् विङ्गम में आपका स्वागत है — श्रीमद्भागवत महापुराण की पावन कथाओं और शिक्षाओं की एक भक्तिपूर्ण यात्रा। राजा पृथु का देदीप्यमान जीवन अब पूर्ण हो चुका है, और मैत्रेय उनके वंश की कथा में एक नया सूत्र खोलते हैं। यह चतुर्विंश अध्याय वंश को आगे राजा प्राचीनबर्हि के दस पुत्रों — प्रचेताओं — तक ले जाता है, जो, अपने पिता के निर्देश पर, तपस्या करने निकल पड़ते हैं ताकि राजवंश आगे चले।

अपनी यात्रा के मार्ग में, स्वयं भगवान् शिव एक विशाल सरोवर के जल से उनके समक्ष उठ खड़े होते हैं, और उन्हें परम के प्रति पूर्णतः समर्पित पाकर, वे उन्हें उनकी तपस्या पवित्र करने हेतु प्रसिद्ध रुद्र-गीत सिखाते हैं। प्रचेता उसे श्रद्धा से ग्रहण करते हैं और अपनी लम्बी तपस्या आरम्भ करते हैं, उसे एकाग्र मन से जपते हुए। यह सच्चे जनों के प्रति महान् जनों की कृपा का, एक पवित्र स्तोत्र की उस शक्ति का जो एक आत्मा को उसकी कठिनाइयों के पार ले जाती है, और उस कोमल सत्य का अध्याय है कि विश्व जिन्हें संहारक मानकर काँपता है, वे स्वयं शिव भी एक भक्त हैं जो परम को प्रणाम करते हैं।

अध्याय की जानकारी

- शास्त्र: श्रीमद्भागवत महापुराण
- स्कन्ध: 4 (चतुर्थ स्कन्ध)
- अध्याय: 24 (चतुर्विंश अध्याय)
- अध्याय का शीर्षक: प्रचेताओं को सिखाया गया भगवान् शिव का स्तोत्र
- मुख्य वक्ता: महर्षि मैत्रेय, विदुर को अपने उपदेश की निरन्तरता में (जिसमें भगवान् शिव का स्तोत्र उद्धृत है)
- मुख्य श्रोता: विदुर
- मुख्य स्थल: एक विशाल सरोवर का तट, जहाँ प्रचेता भगवान् शिव से मिलते हैं
- केन्द्रीय विषय: प्रचेता तपस्या के लिए निकलते हैं, भगवान् शिव से मिलते हैं, और उनसे परम भगवान् का एक पवित्र स्तोत्र पाते हैं
- मुख्य श्लोक-सीमा: स्कन्ध 4, अध्याय 24, श्लोक 1-79
- मूल संस्करण: गीता प्रेस श्रीमद्भागवत महापुराण

पिछले अध्याय का सन्दर्भ

अध्याय 23 ने राजा पृथु के जीवन को भगवान् के धाम को उनके प्रस्थान के साथ पूर्ण किया। यह चतुर्विंश अध्याय उनके वंश को कई पीढ़ियों तक आगे राजा प्राचीनबर्हि तथा उनके दस पुत्रों, प्रचेताओं, तक ले जाता है, और उस महान् कृपा की ओर मुड़ता है जो वे अपने आध्यात्मिक कार्य पर निकलते समय भगवान् शिव से पाते हैं।

प्रचेता तपस्या के लिए निकलते हैं

मैत्रेय ने पृथु के वंशजों को राजा प्राचीनबर्हि तक अनुगमन किया, जिनके दस पुत्र एक साथ प्रचेता कहलाते थे। अपने पिता के निर्देश पर — वंश को आगे चलाने तथा भगवान् को प्रसन्न करने के लिए — दस भ्राता, एक मन तथा एक प्रयोजन के, कठोर तपस्या करने घर से निकल पड़े। साथ यात्रा करते हुए, वे अन्ततः एक विशाल तथा सुन्दर सरोवर के तट पर आए, सन्त के मन की भाँति निर्मल, जहाँ वे अपनी तपस्या आरम्भ करना चाहते थे।



अपने पिता के निर्देश पर, दस राजकुमार भ्राता, प्रचेता, एक मन होकर एक साथ कठोर तपस्या करने निकलते हैं, एक महान् तथा पवित्र सरोवर की ओर यात्रा करते हुए (श्लोक 8-14)।

भगवान् शिव से भेंट

जैसे ही प्रचेता सरोवर के तट पर खड़े हुए, अपनी लम्बी तपस्या के संकल्प के साथ, स्वयं भगवान् शिव, उनकी सच्चाई से द्रवित तथा उनकी भक्ति से प्रसन्न होकर, कृपापूर्वक उनके समक्ष प्रकट हुए, अपने अनुचरों सहित जल से तेजस्वी रूप में उठते हुए, उन्हें आशीर्वाद देने तथा उपदेश देने। भ्राताओं ने विस्मय तथा श्रद्धा से उनके समक्ष प्रणाम किया, और शिव ने, भली प्रकार प्रसन्न होकर, उन्हें वह देने का प्रस्ताव किया जो उन्हें उनकी तपस्या के पार सुरक्षित ले जाएगा: परम भगवान् की स्तुति का एक पवित्र स्तोत्र।



सरोवर के तट पर, भगवान् शिव, प्रचेताओं की सच्चाई से प्रसन्न होकर, अपने अनुचरों सहित कृपापूर्वक उनके समक्ष प्रकट होते हैं, उन्हें आशीर्वाद देने तथा उपदेश देने (श्लोक 22-31)।

स्तोत्र आरम्भ करने से पहले, शिव ने भ्राताओं को स्पष्ट बताया कि उनकी सच्चाई ने उन्हें क्यों द्रवित किया: वे पहले से जानते थे कि प्रचेता क्या करने जा रहे हैं, और यह जानना ही उनकी कृपा का कारण था (श्लोक 27)। तब उन्होंने वह पंक्ति कही जो इस सम्पूर्ण भेंट की छिपी हुई कुंजी है।

यः परं रहसः साक्षात्

त्रिगुणाज्जीवसंज्ञितात् ।

भगवन्तं वासुदेवं प्रपन्नः स प्रियो हि मे ॥ २८ ॥

yaḥ param ramhasaḥ sākṣāt tri-guṇāj jīva-samjñitāt bhagavantaṁ vāsudevaṁ prapannaḥ sa priyo hi me

अर्थ: जो कोई साक्षात् परम पुरुष वासुदेव के प्रति समर्पित है — जो त्रिगुणों से तथा देहधारी आत्मा से भी परे हैं — वह मुझे सचमुच प्रिय है। (स्कन्ध 4, अध्याय 24, श्लोक 28)

उनका राजसी रक्त या उनकी तपस्या नहीं, बल्कि यह साधारण तथ्य कि उनके हृदय किसके प्रति समर्पित हैं, वही शिव का प्रेम जीत चुका है। वे आगे कहते हैं: जो पुरुष सौ जन्मों तक निष्ठापूर्वक अपना कर्तव्य निभाता है, वह समय के साथ ब्रह्मा का पद पा सकता है, और अधिक योग्यता से शिव के अपने धाम तक भी पहुँच सकता है, परन्तु जो विष्णु के प्रति अटल भक्ति से सीधे समर्पित होता है, वह तुरन्त आध्यात्मिक लोक को प्राप्त होता है — एक ऐसा गन्तव्य जिसे स्वयं शिव तथा अन्य देवगण इस ब्रह्माण्ड के अन्त होने पर ही पाते हैं (श्लोक 29)। इस प्रकार स्तोत्र का एक भी शब्द गाए जाने से पहले, शिव उसकी गहनतम शिक्षा दे चुके हैं: परम के भक्त उन्हें अपनी ही उपासना से कहीं अधिक प्रिय हैं।

भगवान् शिव का स्तोत्र

तब भगवान् शिव ने उनके लिए परम भगवान् की स्तुति का एक सुन्दर स्तोत्र — रुद्र-गीत — गाया। उन्होंने भगवान् को, सबकी आत्मा को, समस्त विजय तथा पूजा अर्पित करते हुए आरम्भ किया, यह घोषणा करते हुए कि प्रत्येक भला उनकी उपासना से सिद्ध होता है, और प्रत्येक प्राणी की अन्तरतम आत्मा के रूप में उन्हें प्रणाम करते हुए।

श्रीरुद्र उवाच

जितं त आत्मविद्वर्यस्वस्तये स्वस्तिरस्तु मे ।

भवताराधसा राद्धं सर्वस्मा आत्मने नमः ॥ ३३ ॥

śrī-rudra uvāca jitaṁ ta ātma-vid-varya- svastaye svastir astu me bhavatārādhasā rāddhaṁ sarvasmā ātmane namaḥ

अर्थ: श्रीरुद्र (शिव) ने कहा: विजय आपकी है, हे आत्मज्ञानियों में अग्रगण्य; जो आपको जानते हैं उन सबके कल्याण के लिए कल्याण हो; प्रत्येक भला आपकी उपासना से सिद्ध होता है; आपको, सबकी आत्मा को, मैं प्रणाम करता हूँ। (स्कन्ध 4, अध्याय 24, श्लोक 33)

जैसे-जैसे स्तोत्र आगे बढ़ा, शिव स्तुति से उपदेश की ओर मुड़े, यह सिखाते हुए कि केवल भक्ति ही वह देती है जो अन्य हर मार्ग केवल वचन देता है। शुद्ध भक्ति मुक्त पुरुषों के लिए भी दुर्लभ है, उन्होंने कहा, फिर भी उसके अतिरिक्त कुछ भी भगवान् को सचमुच सन्तुष्ट नहीं कर सकता; किसी भक्त के साथ एक क्षण का सत्संग भी कर्म तथा ज्ञान दोनों के फल से बढ़कर है (श्लोक 55-57)। और उन्होंने जितनी शक्तियों का वर्णन किया, उनमें इससे अधिक विस्मयकारी कोई नहीं: काल स्वयं, जिसके समक्ष सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड चूर-चूर हो जाता है, भगवान् के चरणों में शरण लिए हुए को छू भी नहीं सकता।

यत्र निर्विष्टमरणं कृतान्तो नाभिमन्यते ।

विश्वं विध्वंसयन् वीर्यशौर्यविस्फूर्जितभ्रुवा ॥ ५६ ॥

yatra nirviṣṭam araṇam kṛtānto nābhimanyate viśvaṁ vidhvamsayan vīrya- śaurya-visphūrjita-bhruvā

अर्थ: काल, जो अपनी भौंह की एक हलचल मात्र से सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड को विनष्ट कर सकता है, आपके चरणों में शरण लिए हुए आत्मा के निकट आने का साहस नहीं करता। (स्कन्ध 4, अध्याय 24, श्लोक 56)

उस लम्बे तथा मनोहर स्तोत्र में शिव ने परम भगवान् की स्तुति सबके स्रोत, पालक, तथा लक्ष्य के रूप में की — मन तथा इन्द्रियों की पहुँच से परे, फिर भी उनके प्रेमियों के लिए हृदय से भी निकट। और एक अत्यन्त कोमल श्लोक में उन्होंने अपने ही अस्तित्व का गहनतम रहस्य स्वीकार किया: कि यद्यपि सम्पूर्ण संसार रुद्र के भय से काँपता है, जो अन्त में सब कुछ विलीन कर देते हैं, परम भगवान् स्वयं बुद्धिमानों के एकमात्र निर्भय आश्रय हैं, जिनमें संहारक भी शरण लेते हैं।

अथ त्वमसि नो ब्रह्मन् परमात्मन् विपश्चिताम् ।

विश्वं रुद्रभयध्वस्तमकुतश्चिद्भया गतिः ॥ ६८ ॥

atha tvam asi no brahman paramātman vipaścitām viśvaṁ rudra-bhaya-dhvastam akutaścid-bhayā gatiḥ

अर्थ: हे ब्रह्मन्, परमात्मन्, आप बुद्धिमानों द्वारा लक्ष्य के रूप में जाने जाते हैं; यद्यपि सम्पूर्ण संसार रुद्र के भय से विनष्ट होता है, आपके भक्तों के लिए आप निर्भय आश्रय हैं। (स्कन्ध 4, अध्याय 24, श्लोक 68)



भगवान् शिव सुन्दर रुद्र-गीत गाते हैं, परम भगवान् को सबके स्रोत तथा लक्ष्य के रूप में, और उस निर्भय आश्रय के रूप में स्तुत करते हुए जिसमें लोकों का संहारक भी शरण लेता है (श्लोक 32-70)।

स्तोत्र का उपहार

सम्पूर्ण स्तोत्र गाकर, शिव ने राजकुमारों को यह बताया कि ऐसा भक्तिपूर्ण श्रवण तथा कीर्तन किसी के लिए क्या कर सकता है।

इदं यः कल्य उत्थाय प्राञ्जलिः श्रद्धयान्वितः ।
शृणुयाच्छ्रावयेन्मर्त्यो मुच्यते कर्मबन्धनैः ॥ ७८ ॥

idaṁ yaḥ kalya utthāya prāñjaliḥ śraddhayānvitaḥ śṛṇuyāc chrāvayen martyo mucyate karma-bandhanaiḥ

अर्थ: जो मरणधर्मा प्रातःकाल उठकर, हाथ जोड़े तथा श्रद्धा से, शिव द्वारा गाए इन स्तोत्रों को सुनता या कीर्तन करता है, वह कर्मों के बन्धन से मुक्त हो जाता है। (स्कन्ध 4, अध्याय 24, श्लोक 78)

और उन्होंने दस भ्राताओं को अपना आशीर्वाद तथा आदेश दिया: परम पुरुष के इस स्तोत्र को एकाग्र मन से जपते हुए, वे अपनी महान् तपस्या करें — और अन्त में वे अपने हृदय की अभिलाषा प्राप्त करेंगे।

गीतं मयेदं नरदेवनन्दनाः
परस्य पुंसः परमात्मनः स्तवम् ।
जपन्त एकाग्रधियस्तपो महत्
चरध्वमन्ते तत आप्स्यथेप्सितम् ॥ ७९ ॥

*gītaṁ mayedaṁ naradeva-nandanāḥ parasya puṁsaḥ paramātmanaḥ stavam japanta ekāgra-
dhiyas tapo mahat caradhvam ante tata āpsyathepsitam*

अर्थ: (शिव ने कहा:) हे राजपुत्रो, परम पुरुष, परमात्मा के इस स्तोत्र को, जो मैंने गाया है, एकाग्र मन से जपते हुए अपनी महान् तपस्या करो; और अन्त में तुम अपनी अभिलाषा प्राप्त करोगे। (स्कन्ध 4, अध्याय 24, श्लोक 79)



प्रचेता पवित्र स्तोत्र को श्रद्धा से ग्रहण करते हैं और अपनी लम्बी तपस्या आरम्भ करते हैं, उसे एकाग्र मन से जपते हुए जैसा भगवान् शिव ने आदेश दिया था (श्लोक 71-79)।

प्रचेताओं ने पवित्र स्तोत्र को नत शिरो तथा कृतज्ञ हृदयों से ग्रहण किया, और, जैसे ही शिव ने उन्हें आशीर्वाद देकर विदा ली, उन्होंने अपनी लम्बी तपस्या आरम्भ की, रुद्र-गीत को एकनिष्ठ भक्ति से जपते हुए। इस प्रकार चतुर्विंश अध्याय दस भ्राताओं को उनकी तपस्या पर स्थापित कर समाप्त होता है, स्वयं शिव द्वारा दिए एक स्तोत्र से सज्जित — उस महान् उपदेश के लिए तैयार जो आगे के अध्याय लाएँगे, जब देवर्षि नारद उनके पिता के समक्ष पुरज्जन की कथा खोलेंगे।

इस अध्याय की प्रमुख शिक्षाएँ

1. सच्चाई महान् जनों की कृपा खींच लाती है। भगवान् शिव प्रचेताओं के समक्ष इसलिए प्रकट होते हैं क्योंकि उनकी सच्चाई ने उन्हें प्रसन्न किया, इसलिए नहीं कि उन्होंने उन्हें विवश किया। आध्यात्मिक जीवन में सच्ची निष्ठा वह सहायता खींच लाती है जिसे हम कभी आदेश नहीं दे सकते (श्लोक 24-25)।
2. एक पवित्र स्तोत्र कठिनाई में साथी है। शिव प्रचेताओं की तपस्या नहीं हटाते; वे उन्हें उसके पार ले जाने एक स्तोत्र देते हैं। पवित्र नाम तथा पवित्र वचन हमारी कठिनाइयों के पार एक शॉर्टकट नहीं बल्कि उनके भीतर एक बल हैं (श्लोक 79)।
3. महानतम भी परम के भक्त हैं। भगवान् शिव, जिन्हें संसार संहारक के रूप में डरता है, इस स्तोत्र में परम भगवान् को अपने निर्भय आश्रय के रूप में प्रणाम करते हैं। सचमुच महान् अन्तिमता का दावा नहीं करते; वे अपने से परे भगवान् की ओर संकेत करते हैं (श्लोक 68)।

4. भगवान् एकमात्र निर्भय आश्रय हैं। संहार के भय से छाया एक संसार में, केवल परम भगवान् वह आश्रय हैं जिनमें कोई भय नहीं। उनकी शरण लेना उस एक सुरक्षित भूमि को पाना है जो नश्वर सबके नीचे है (श्लोक 68)।

5. भक्तिपूर्ण श्रवण तथा कीर्तन आत्मा को मुक्त करते हैं। शिव वचन देते हैं कि जो कोई इस स्तोत्र को श्रद्धा से सुनता या कीर्तन करता है वह कर्मों के बन्धन से मुक्त हो जाता है। पवित्र ध्वनि, भक्ति से ग्रहण की गई, कर्म की जंजीरों को ही ढीला कर देती है (श्लोक 78)।

6. सीधा समर्पण योग्यता की सीढ़ी से आगे निकल जाता है। दीर्घकालीन कर्मकाण्ड एक आत्मा को अन्ततः ब्रह्मा तक अथवा शिव के अपने लोक तक भी पहुँचा सकता है, परन्तु शिव घोषणा करते हैं कि विष्णु के प्रति अटल समर्पण एक भक्त को इस सबसे एक ही छलांग में आगे ले जाता है — क्योंकि ऐसा भक्त, वे कहते हैं, उन्हें सृष्टि में किसी अन्य से अधिक प्रिय है (श्लोक 28-29)।

एक भक्तिपूर्ण चिन्तन

इस अध्याय का सबसे मार्मिक स्वर भगवान् शिव के स्तोत्र के हृदय में छिपा एक शान्त स्वीकारोक्ति है। यहाँ रुद्र हैं, वह महाबली जिनके आगमन पर सम्पूर्ण संसार काँपता है, वह संहारक जिनके समक्ष देव भी भयभीत होते हैं — और वे अपनी वाणी स्तुत होने के लिए नहीं, बल्कि स्तुति करने के लिए उठाते हैं; अन्तिम आश्रय माने जाने के लिए नहीं, बल्कि अपने से परे उस एक की ओर संकेत करने के लिए जिनमें वे स्वयं शरण लेते हैं। “यद्यपि सम्पूर्ण संसार रुद्र के भय से विनष्ट होता है,” वे गाते हैं, “आपके भक्तों के लिए आप निर्भय आश्रय हैं।” यहाँ एक गहरी विनम्रता है जो हमारी महानता की सम्पूर्ण समझ को पुनर्व्यवस्थित कर देती है। जिसे हम अन्तिम मानने का प्रलोभन पा सकते थे, वही मुड़कर परम को प्रणाम करते हैं, और दस युवा साधकों को वही करना सिखाते हैं। यह हमें बताता है कि सच्ची महानता का चिह्न, ब्रह्माण्ड की सर्वोच्च ऊँचाइयों पर भी, अपने पर पूजा एकत्र करना नहीं बल्कि उसे भगवान् को सौंप देना है। और इसमें उपदेश के साथ सान्त्वना भी है। यदि संहारक स्वयं भगवान् में एक निर्भय आश्रय पाते हैं, तो हम भी पा सकते हैं — चाहे हम अपने छोटे जीवनों के परिवर्तनों तथा अन्तों के आगे कितना ही काँपें। अध्याय हमारे समक्ष वही उपहार रखता है जो शिव ने प्रचेताओं को दिया: हृदय में धारण करने को एक स्तोत्र, प्रातः जिसके साथ उठने को एक नाम, और यह आश्वासन कि जिनकी वह स्तुति करता है वे हमारे समस्त भयों के नीचे की निर्भय भूमि हैं।

एक दैनिक भक्ति-अभ्यास

आज, वह अभ्यास ग्रहण करें जो शिव ने प्रचेताओं को दिया: अपना दिन स्तुति से आरम्भ करें। जब आप उठें, इससे पहले कि दिन की चिन्ताएँ भीड़ करें, एक क्षण हाथ जोड़े तथा श्रद्धा से रुकें, और भगवान् को स्तुति का एक वचन अर्पित करें — एक श्लोक, एक नाम, या बस “ॐ नमो भगवते वासुदेवाय”, जैसे प्रचेताओं ने शिव द्वारा सिखाए स्तोत्र से अपनी तपस्या आरम्भ की। उसे अपने हृदय का पहला कार्य होने दें, ताकि सम्पूर्ण दिन उस पर वहन हो। और जब आप में भय उठे — हानि का, परिवर्तन का, प्रत्येक जीवन को छाया करने वाले अन्तों का — तो शिव की स्वीकारोक्ति स्मरण करें, और अपना आश्रय वहाँ लें जहाँ संहारक भी अपना लेते हैं: परम भगवान् में, एकमात्र निर्भय भूमि। दिन को स्तुति से आरम्भ करने तथा भय का सामना आश्रय से करने में, आप प्रचेताओं के पदचिह्नों पर चलते हैं, भगवान् शिव के स्तोत्र से सज्जित।

उपसंहार

चतुर्थ स्कन्ध का चतुर्विंश अध्याय पृथु के वंश की कथा में एक नया सूत्र खोलता है। कई पीढ़ियों तक आगे अनुगमित, कथा राजा प्राचीनबर्हि के दस पुत्रों, प्रचेताओं, तक आती है, जो अपने पिता के निर्देश पर कठोर तपस्या करने निकलते हैं। एक विशाल सरोवर के तट पर पहुँचकर, वे स्वयं को भगवान् शिव के समक्ष पाते हैं, जो जल से अपने तेजस्वी रूप में उठकर यह घोषणा करते हैं कि वासुदेव के प्रति समर्पित आत्मा उन्हें

सृष्टि की किसी भी अन्य वस्तु से अधिक प्रिय है, और फिर उन्हें उसी परम भगवान् की स्तुति का एक स्तोत्र — रुद्र-गीत — सिखाते हैं। उसके द्वारा वे भगवान् को सम्पूर्ण अस्तित्व के मूल तथा लक्ष्य के रूप में स्तुत करते हैं, यह दृढ़ करते हैं कि केवल भक्ति ही वह देती है जिसे काल भी नहीं छू सकता, और स्वीकार करते हैं कि संहारक रुद्र स्वयं भी उन्हीं चरणों के अतिरिक्त कहीं शरण नहीं पाते। श्रद्धा से इसका कीर्तन करना, वे बताते हैं, व्यक्ति के पूर्व कर्मों की पकड़ को विलीन कर देता है; अपनी लम्बी तपस्या भर एकाग्र मन से इसे जपना, वे वचन देते हैं, उन्हें वह सब देगा जो वे चाहते हैं। भ्राता यह उपहार नत शिरो से स्वीकार करते हैं और अपनी तपस्या आरम्भ करते हैं। इस प्रकार अध्याय सच्चे जनों के प्रति महान् जनों की कृपा, हर अन्य मार्ग पर समर्पण की सर्वोच्चता, तथा उस कोमल सत्य को सिखाता है कि संहारक भी परम को प्रणाम करते हैं।

श्रीमद्भागवतम् का दिव्य ज्ञान हमारे हृदयों में शुद्ध भक्ति को जागृत करे।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

जय श्री माधव।

सन्दर्भ तथा आभार

- मूल संस्करण: गीता प्रेस, श्रीमद्भागवत महापुराण (अंग्रेज़ी, पूर्ण), चतुर्थ स्कन्ध, चतुर्विंश अध्याय।
- शृंखला: श्रीमद्भागवतम् विज़डम • बिस्व सनातन धर्म सेवा ट्रस्ट।
- पण्डित डॉ. श्री काशीनाथ मिश्र के आध्यात्मिक मार्गदर्शन तथा अनुशंसा के अनुसार प्रस्तुत।

यह लेखक के अपने शब्दों में एक मौलिक, निष्ठावान् पुनर्कथन है, जिसमें संक्षिप्त उद्धृत श्लोक देवनागरी तथा लिप्यन्तरण में दिखाए गए हैं और उनके अर्थ सारांश के रूप में दिए गए हैं। यह किसी एक प्रकाशक के निरन्तर अनुवाद या टीका का पुनरुत्पादन नहीं है। किसी भी प्रकाशक द्वारा किसी सम्बद्धता या समर्थन का दावा नहीं किया गया है।

॥ हरि ॐ तत्सत् ॥

जय श्री माधव

ऑनलाइन पढ़ें: kalkiabatara.org/hi/blog-srimad-bhagavatam-canto-4-chapter-24-the-hymn-of-lord-shiva-taught-to-the-pracetas-hi.html

श्रीमद्भागवतम् विज़डम • कल्कि अवतार इंटरनेशनल • बिस्व सनातन धर्म सेवा ट्रस्ट